नमो नारायण,

श्री स्वामी सत्यानन्द जी की तपोभूमि, रिखियापीठ में सीता कल्याणम् के अवसर पर १९ से २३नवम्बर, २०१७ तक आयोजित २२ वें शत्चण्डी महायज्ञ में आपका स्वागत करने का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। इस पावन अवसर पर मैं आपको सपरिवार व बन्धु-बान्धवों सहित पूजा में सम्मिलित होने के लिए सादर आमंत्रित करता हूँ।

—श्रीकान्त गोयनका

कार्यक्रम:

१९ से २२ नवम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ६ बजे तक	शतचण्डी पूजा
२३ नवम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ५ बजे तक	शतचण्डी पूर्णाहुति एवं सीता-राम विवाह

नमो नारायण,

श्री स्वामी सत्यानन्द जी के जीवन व शिक्षाओं की स्मृति में रिखियापीठ में योग पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर, २०१७ तक आयोजित महामृत्युंजय यज्ञ में आपका हार्दिक स्वागत है। इस पावन यज्ञ में अपने परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित अपनी श्रद्धा अर्पित करने तथा भगवान शिव एवं गुरुदेव के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आपको सादर आमंत्रित करते हुए मुझे गर्व व अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

—नटवर रतेरिया

कार्यक्रम:

३० नवम्बर से २ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ६ बजे	मृत्युंजय होम
३ दिसम्बर	प्रात: ८ बजे से सायं ५ बजे	मृत्युंजय पूर्णाहुति एवं परमहंस सत्यानन्द जी का जन्मदिवस

कार्यक्रम स्थल:

रिखियापीठ, देवघर, झारखण्ड ८१४११३

सम्पर्क सूत्र:

फोन - ०९१०२६९९८३१, ०६४३२-२९०८७०

(८ से ११ बजे और ३ से ५ बजे तक)

निमंत्रण

शतचण्डी महायज्ञ और योग पूर्णिमा महोत्सव २०१७

स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती

यह जीवन एक यात्रा है जिसे सभी को तय करना है। जन्म-जन्मातर से हम सभी ने यह यात्रा प्रारम्भ की है। इस कठिन यात्रा में हम अवर्णनीय कष्टों का सामना करते हैं। दु:खों व क्लेशों के धुँधले मार्ग से होते हुए हमें यह यात्रा सम्पन्न करनी है। काम और मोह के इस दुर्गम व दु:साध्य रास्ते से होते हुए हमें यह यात्रा तय करनी है। माया की घाटियों व निराशा के मरूस्थल से होते हुए कठोर परिश्रम करना है। इस सामूहिक यात्रा में पूरी मानवता है परन्तु हममें से अधिकांश लोगों के आंतरिक दिशासूचक यंत्र क्षतिग्रस्त होने के कारण हमलोग दिग्भ्रमित भटक रहे हैं और हमारा गंतव्य हमें दृष्टिगोचर नहीं हो पा रहा है।

आप इस भ्रम में न रहें कि यह निमंत्रण आपको इस यज्ञ में भाग लेने के लिए मात्र एक निवेदन है। इसका उद्देश्य बहुत ऊँचा है। जीवन की इस यात्रा में एक नए अध्याय को प्रारम्भ करने के लिए यह एक अवसर प्रदान करता है। यह साधारण दैनिक जीवन के बन्धनों से मुक्ति पाने के लिए एक निमंत्रण है। यह निमंत्रण अपनी आत्मा की उड़ान भरने के लिए है। सर्वव्यापक दिव्य सत्ता की उपस्थिति में सौन्दर्य और प्रेम के अनुभव से अपने हृदय को आप्लावित करने हेतु यह एक सुनहरा अवसर है। अपने क्षतिग्रस्त दिशासूचक यंत्र का पुनर्गठन करके, गन्तव्य को लक्ष्य करते हुए, अपनी यात्रा पुन: प्रारम्भ करने के लिए यह एक निमंत्रण है।

परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी हम सभी आध्यात्मिक पथिकों के मार्गदर्शक हैं। इस जीवन यात्रा में वे इतने कुशल थे कि उन्होंने योगियों की चिर अभिलाषित चरम साध्य उपलब्धि को सहज ही प्राप्त कर लिया। ५ दिसम्बर २००९ को रिखियापीठ में स्वेच्छा से

शरीर को त्याग कर उन्होंने महासमाधि प्राप्त की। वे उस गंतव्य तक पहुँच गए, जहाँ हम में से प्रत्येक व्यक्ति जाने-अनजाने पहुँचने का प्रयास कर रहा है। परमात्मा से मिलन ही आत्मा का एक मात्र वास्तविक गन्तव्य है जो परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने प्राप्त किया।

परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने न केवल सब को उस गन्तव्य तक पहुँचने का लक्ष्य स्मरण कराया बल्कि अपने जीवन को एक आदर्श के रूप में हम सभी के लिए प्रस्तुत किया। निष्काम सेवा, भगवद्भक्ति और सबसे श्रेष्ठ मानवता के लिए असीम प्रेम ही उनका मार्ग है। उनके पदचिह्नों के अनुगमन मात्र से हम अपने जीवन में सुख, शान्ति व सरलता को प्राप्त कर सकते हैं। वे जानते थे कि हमारी इस जीवन यात्रा में हमें मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ेगी। उन्हें ज्ञात था की हमारे दिशासूचक यंत्र क्षतिग्रस्त हो सकते हैं और हम पथभ्रष्ट हो जाएँगे। उन्हें हमारी कठिनाईयों का पूर्वज्ञान था। इसलिए अपनी दया, करुणा व अन्तर्ज्ञान से परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने सुनिश्चित किया कि इस यात्रा में हम पथभ्रष्ट हुए बगैर आगे बढ़ते रहें।

इसी प्रयोजन से उन्होंने एक नहीं, बल्कि दो भव्य यज्ञों के आयोजन की परम्परा रिखियापीठ में स्थापित की। शत्चण्डी महायज्ञ, जिसका आयोजन इस वर्ष १९ नवम्बर से २३ नवम्बर तक होगा, जिसमें देवी माँ का आवाहन होता है। योग पूर्णिमा महोत्सव, जिसका आयोजन इस वर्ष ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर तक होगा, जिसमें परमपिता परमेश्वर शिव का आवाहन होता है। इन दो अत्यन्त शक्तिशाली आराधनाओं के अतिप्राचीन ज्ञान से मानवता को सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त होती है।

"यज्ञ का उद्देश्य दिव्य, करुणामयी व दयालु शक्ति के साथ संबंध स्थापित करना है ताकि हम परमात्मा से संबंध स्थापित कर सकें।"

—परमहंस स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

जगत् जननी माँ और परमपिता शिव के आवाहन से उनके दिव्य प्रेम, अनुग्रह व आशीर्वाद की वर्षा हम पर पड़ती है। स्नेही माता-पिता के समान देवी माँ और परमपिता शिव हम बच्चों का ध्यान रखते हैं। शिशु की भाँति हम सब अपने पहले लड़खड़ाते कदमों से अपने माता-पिता की फैली हुई बाहों की सुरक्षा में जा रहे हैं। वे अपनी असीम अनुकम्पा से समस्त अवरोधों और परेशानियों को दूर करते हैं जो हमें उनके आँचल तक पहुँचने के मार्ग में बाधा पहुँचा सकती हैं।

इन परिपूर्ण यज्ञों का समापन बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ होता है। शत्चण्डी महायज्ञ की पूर्णाहुति कन्या पूजन की सनातन विधि द्वारा सम्पन्न होगी जिसमें रिखियापीठ की कन्याओं को देवी के प्रतीक के रूप में पूजा की जाएगी। इसके पश्चात दैवी शक्तियों के संयोग के प्रतीकात्मक रूप में उमंग व उत्साह के साथ सीता-राम विवाहोत्सव मनाया जाएगा। योग पूर्णिमा के समापन दिवस पर परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी का जन्मोत्सव मनाया जाएगा। यह एक ऐसा अवसर है जब हम भक्ति के साथ अपनी कृतज्ञता उन्हें अर्पित करते हैं जिन्होंने हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है।

यज्ञ की मशाल के साथ-साथ परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी ने योग की ध्वजा का आश्रय भी हमें दिया है। योग का ज्ञान मानवता के लिए सबसे अनमोल उपहार है। उन्हें ज्ञात था कि यज्ञ के साथ-साथ योग ही जीवन की इस यात्रा के दिग्भ्रमित पथिकों के लिए समाधान है। इसी कारणवश योग पूर्णिमा महोत्सव के साथ क्रिया योग एवं तत्त्व शुद्धि सत्र २७ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आयोजित किया जाएगा ताकि आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को यज्ञ के चमत्कार और योग के जादू को एक साथ अनुभव करने का अवसर मिले।

हम सभी साधकों के लिए अगर यज्ञ मशाल है और योग ध्वजा है तो स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती तथा स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती, जो इन आयोजनों की अध्यक्षता करेंगे, निश्चित ही हमारे सम्माननीय व श्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि हमारी यह यात्रा अत्यन्त कठिन होते हुए भी हर्ष, उल्लास व आनन्द से परिपूर्ण है। उनका उत्साह भरा व्यक्तित्व हम सभी को हर्षोन्मत्त कर देता है। उनकी अन्तर्दृष्टि हमें मानसिक शान्ति प्रदान करती है। उनका ज्ञान हमें समझ प्रदान करता है और उनका प्रेम हमारे हृदय को आलोकित करता है। इन भव्य यज्ञों में उनका मार्गदर्शन हमारे लिए एक वरदान है।

हमारे परमगुरु स्वामी शिवानन्दजी और परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी की ओर से आप सपरिवार व बन्धु-बान्धवों सहित शतचण्डी महायज्ञ एवं योग पूर्णिमा महोत्सव में सादर आमंत्रित हैं ताकि हम सब कुछ देर के लिए ही सही जीवन की इस दुर्गम यात्रा के सहयात्री बन सकें।